गुरु तेगबहादुर जी का असम (धुबड़ी) आगमन

हरकीरत हीर

सिख पंथ के नौवें गुरु श्री गुरु तेगबहादुर, श्री गुरु नानक देव जी महाराज के बाद पहले ऐसे गुरु थे जिन्होंने पंजाब के बाहर धर्म प्रचार के लिए यात्रा की। पूर्व की यात्रा के समय गुरु नानक मिशन का प्रचार करते हुए 1666 ई० में वे पटना साहिब आए। इनके साथ गुरु जी की माता नानकीजी, पत्नी माता गुजरी जी. उनके भाई कृपाल चंद जी व दरबारी भी आए। गुरु जी कुछ समय बडी संगत, गाय घाट ठहरने के बाद परिवार सहित सालिस राय जौहरी की संगत मंजो साहिब में आए। उस समय इस संगत का संचालन अधरकाके परपोते घनश्याम करते थे। गुरु तेगबहादुर जी कुछ दिन रुकने बाद परिवार को यहाँ छोड़ कर बंगाल व आसाम (असम) चले गए। गुरु जी का पड़ाव हमेशा किसी नदी या गाँव के किनारे होता। इस प्रकार गुरु किरतपुर, सैफाबाद, कैथल, पाहवा, बरना, करनखेड़ा, कुरुक्षेत्र, दिल्ली इटावा, धानपुर, फतेहपुर, प्रयाग, मिर्जापुर, जौनपुर, पटना होते हुए ढाका पहुँचे। दिसम्बर 1667 में औरंगजेब को असम से खबर मिली कि जिले का राजा बागी हो गया है और मुगल फौजों को जबर्दस्त शिकस्त दी है और गुवाहाटी पर कब्जा कर लिया है। असम ही एक ऐसा राज्य था जहाँ मुगल शासकों को अब तक सफलता नहीं मिली थी। जो भी मुगल शासक आगे बढ़ता या तो उसे हार मिलती या मीत के घाट उतार दिया जाता। इसकी वजह ये असम में उस समय प्रचलित तांत्रिक शक्तियों के प्रयोग को मानते हैं। औरंगजेब ने गुवाहाटी पर कब्जा करने के लिए राम सिंग को सेना देकर असम भेजने का फैसला किया। राजा राम सिंह उस समय उसको हिरासत में था। औरंगजेब ने सांचा अगर यह मर गया तो एककाफिर खत्म हो जाएगा और कहीं जीत गया ती लाभ ही लाभ है। राजा राम सिंह अपनी फौज लेकर पटना पहुँचा। पटना उसे पता चला कि गुरु तेगबहादुर जी अपने परिवार को पटना छोड़ कर यात्रा के लिए ढाका गए हैं। इन्हीं दिनों पटना में गुरु तेगबहादुर जी के एक पुत्र गोबिन्द सिंह का जन्म हुआ। इधर राजा राम सिंह और उसके सैनिक असम में प्रचलित जादू-टोने और तांत्रिक शक्तियों से अति भयभीत थे और वे गुरु जी के तेज और प्रताप से भी परिचित थे। अतः राम सिंह ने सोचा कि अगर वह गुरु जी को अपने साथ असम ली जाने के लिए मना लेता है तो वह इन तांत्रिक शक्तियों से बच सकता है। वह पटना से गुरु जी के पास ढाका पहुँच गया और गुरु जी से अपने साथ असम चलने की बिनती की। गुरु जी तो असम यात्रा का पहले ही मन बना चुके थे क्योंकि वे गुरु नानक के उस स्थान को देखना चाहते थे जहाँ (भुबड़ी) उन्होंने आसन ग्रहण किया था। असम पहुँच कर गुरु जी ने भुबड़ी साहिब में ही डेरा डाला। फौजें 15 मिल दूर रंगमादी में ठहरी।

ऐसा माना जाता है कि उस समय असम में तांत्रिक शक्तियों का उपयोग बहुत ज्यादा होता था। खुद मुसलमान लेखकों ने भी अपनी लेखनी में इन शक्तियों का आँखों देखा वर्णन प्रस्तुत किया है। गुवाहाटी का कामख्या मंदिर तो इस तांत्रिक विद्या का केंद्र था।

दुश्मन को हराने के लिए तथा और शक्तियाँ प्राप्त करने के लिए यहाँ मनुष्यों की बलि दी जाती।

कहते हैं मुगल फौज जब रंगामाटी पहुंची तब तांत्रिक शक्तियों में निर्लिप्त स्त्रियाँ कामाख्या में पूजा अर्चना करने के बाद धुबड़ी के सम्मुख ब्रह्मपुत्र नदी नदी के पार अपने तम्बू गाड़ बैठ गई। उन्हें ज्ञात हुआ कि मुगल सेना के साथ सिखों के गुरु तेगबहादुर भी हैं जो तेज प्रताप वाले महापुरुष हैं। उन्होंने नदी के पार से अपनी तांत्रिक शक्तियों का प्रयोग करना शुरू कर दिया। मन्त्र चलाये, शक्तियाँ दिखीं पर गुरु जी विचलित न हुए और सबको आदेश दिया कि ईश्वर का नाम स्मरण करें और भजन बंदगी में लीन रहे क्योंकि हमें करामत या बल नहीं दिखाना है। जब इस जादूगरनियों के तन्त्र-मन्त्र काम न आए तब इन्होंने अपनी तंत्र शक्ति द्वारा एक भारी पत्थर गुरु जी की ओर चलाया। जो गुरु जी के इशारे पर कुछ दूरी पर ही गिर गया। यह पत्थर 13 फुट धरती के अन्दर और 13 फुट धरती के ऊपर है।

यह पत्थर 26 फुट लम्बा और इसका घेरा 26x28 फुट तथा 33 फुट करीबन चौड़ा है। यह पत्थर धुबड़ी साहिब गुरुद्वारे में आज भी अवस्थित है। इसके बाद उन क्रोधित जादूगरनियों ने एक पेड़ भी उठा कर गुरु जी की ओर मारा पर गुरु जी ने उसे भी रोक दिया। उसके बाद उनहोंने तीर चलाये, जौहर दिखाए पर गुरु जी पर कोई असर न हुआ। गुरु जी के तेज प्रताप के आगे उनकी समस्त शक्तियाँ नष्ट हो गई।

तांत्रिक मत के अनुसार जिनकी शक्तियों के ऊपर कोई दूसरा हावी हो जाता है उनकी समस्त शक्तियाँ नष्ट हो जाती हैं और उसकी मौत हो जाती है। अब जादूगरनियाँ घबरा गई उन्हें ज्ञात हो गया कि गुरु तेगबहादुर एक पहुँचे हुए संत हैं जो साक्षात् ईश्वर का रूप हैं। वे गुरु जी के चरणों पर गिर पड़ीं और क्षमा याचना करने लगीं गुरु जी ने उन्हें मुस्कुराते हुए क्षमा कर दिया और तंत्र-मन्त्र का कुमार्ग त्याग देने का वचन लिया।इधर असम के राजा चक्रध्वज ने जब सारा वृत्तांत सुना तो उसने गुरु जी को अपने निवास पर दर्शन देने का किया। गुरु जी स्वयं चल कर राजा चक्रध्वज के निवास पर गए और उनके आग्रह पर गुरु जी ने राजा राम सिंह को गुवाहाटी पर आक्रमण न करने के लिए मना लिया और दोनों की संधि करवा दी।

इस अमन शान्ति के लिए गुरु जी की दोनों शासकों ने शुक्र गुजारी की और दोनों के सैनिकों ने रंगमाटी से लाल मिटटी लाकर गुरु जी के स्थान पर एक ऊँचा टीला बनवाया। आज भी यह टीला धुबड़ी साहिब में मौजूद है जिसे घेर कर रखा गया है और जिसकी मिटटी लोग श्रद्धावश लाकर अपने घर के पवित्र स्थानों पर रखते हैं।

इस प्रकार धुबड़ी साहिब असम का एक ऐतिहासिक धर्म-स्थल बन गया। प्रतिवर्ष गुरु तेगबहादुर के शहीदी दिवस पर यहाँ तीन दिनों तक भारी मेला लगता है। तीनों दिन यहाँ कडाह प्रसाद, लंगर व दूध की सेवा मुफ्त होती है। रहने और नहाने की विशाल व्यवस्था की जाती है। यहाँ देश भर से संगत एकत्रित है। गुवाहाटी गुरुद्वारे से भी स्पेशल बसें चलायी जातीं हैं। इस ऐतिहासिक गुरुद्वारे में इन तीन दिनों तक शब्द कीर्तन, कथा वाचन, और नगर कीर्तन होता है। देश केअन्य धार्मिक गुरुद्वारों से महापुरुषों को शब्द-कीर्तन व प्रवचन के लिए बुलाया जाता है।